



0851CH07

सप्तमः पाठः



भारतजनताऽहम्

[प्रस्तुत कविता आधुनिक कविकुलशिरोमणि डॉ. रमाकान्त शुक्ल द्वारा रचित काव्य 'भारतजनताऽहम्' से साभार उद्धृत है। इस कविता में कवि भारतीय जनता के सरोकारों, विविध कौशलों, विविध रुचियों आदि का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि भारतीय जनता की क्या-क्या विशेषताएँ हैं।]



अभिमानधना विनयोपेता, शालीना भारतजनताऽहम्।

कुलिशादपि कठिना कुसुमादपि, सुकुमारा भारतजनताऽहम्।1।

निवसामि समस्ते संसारे, मन्ये च कुटुम्बं वसुन्धराम्।

प्रेयः श्रेयः च चिनोम्युभयं, सुविवेका भारतजनताऽहम्।2।

विज्ञानधनाऽहं ज्ञानधना, साहित्यकला-सङ्गीतपरा।

अध्यात्मसुधातटिनी-स्नानैः, परिपूता भारतजनताऽहम्।3।



मम गीतैर्मुग्धं समं जगत्, मम नृत्यैर्मुग्धं समं जगत्।

मम काव्यैर्मुग्धं समं जगत्, रसभरिता भारतजनताऽहम्।4।

उत्सवप्रियाऽहं श्रमप्रिया, पदयात्रा-देशाटन-प्रिया।

लोकक्रीडासक्ता वर्धेऽतिथिदेवा, भारतजनताऽहम्।5।

मैत्री मे सहजा प्रकृतिरस्ति, नो दुर्बलतायाः पर्यायः।

मित्रस्य चक्षुषा संसारं, पश्यन्ती भारतजनताऽहम्।6।



विश्वस्मिन् जगति गताहमस्मि, विश्वस्मिन् जगति सदा दृश्ये।

विश्वस्मिन् जगति करोमि कर्म, कर्मण्या भारतजनताऽहम्।7।



| | | |
|------------------------------|---|---------------------------------------|
| अभिमानधना | - | स्वाभिमान रूपी धन वाली |
| विनयोपेता (विनय+उपेता) | - | विनम्रता से परिपूर्ण |
| कुलिशादपि (कुलिशात्+अपि) | - | वज्र से भी |
| कठिना, कठोरा | - | कठोर |
| कुसुमादपि (कुसुमात्+अपि) | - | फूल से भी |
| सुकुमारा | - | अत्यंत कोमल |
| वसुन्धराम् | - | पृथ्वी को |
| प्रेयः (प्रियकर) | - | अच्छा लगने वाला, रुचिकर |
| श्रेयः | - | कल्याणकर, कल्याणप्रद |
| चिनोम्युभयम् (चिनोमि+उभयम्)- | - | दोनों को ही चुनती हूँ |
| अध्यात्मसुधातटिनी-स्नानैः | - | अध्यात्मरूपी अमृतमयी नदी में स्नान से |
| परिपूता | - | पवित्र |
| रसभरिता | - | आनंद से परिपूर्ण |
| आसक्ता | - | अनुराग रखने वाली |
| प्रकृतिः | - | स्वभाव |
| कर्मण्या | - | कर्मशील |



अभ्यासः



1. पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत-

2. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) अहं वसुन्धरां किं मन्ये?

(ख) मम सहजा प्रकृति का अस्ति?

(ग) अहं कस्मात् कठिना भारतजनताऽस्मि?

(घ) अहं मित्रस्य चक्षुषां किं पश्यन्ती भारतजनताऽस्मि?

3. प्रश्नानाम् उत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत-

(क) भारतजनताऽहम् कैः परिपूता अस्ति?

(ख) समं जगत् कथं मुग्धमस्ति?

(ग) अहं किं किं चिनोमि?

(घ) अहं कुत्र सदा दृश्ये

(ङ) समं जगत् कैः कैः मुग्धम् अस्ति?

4. सन्धिविच्छेदं पूरयत-

(क) विनयोपेता = विनय + उपेता

(ख) कुसुमादपि = +

(ग) चिनोम्युभयम् = चिनोमि +

(घ) नृत्यैर्मुग्धम् = + मुग्धम्

(ङ) प्रकृतिरस्ति = प्रकृतिः +

(च) लोकक्रीडासक्ता = लोकक्रीडा +

5. विशेषण-विशेष्य पदानि मेलयत-

विशेषण-पदानि

सुकुमारा

सहजा

विश्वस्मिन्

समम्

समस्ते

विशेष्य-पदानि

जगत्

संसारे

भारतजनता

प्रकृति

जगति

6. समानार्थकानि पदानि मेलयत-

जगति

कुलिशात्

प्रकृति

चक्षुषा

तटिनी

वसुन्धराम्

नदी

पृथ्वीम्

संसारे

स्वभावः

वज्रात्

नेत्रेण

7. उचितकथानां समक्षम् (आम्) अनुचितकथानानां समक्षं च (न) इति लिखत-

- (क) अहं परिवारस्य चक्षुषा संसारं पश्यामि।
- (ख) समं जगत् मम काव्यैः मुग्धमस्ति।
- (ग) अहम् अविवेका भारतजनता अस्मि।
- (घ) अहं वसुन्धरां कुटुम्बं न मन्ये।
- (ङ) अहं विज्ञानधना ज्ञानधना चास्मि।

योग्यता-विस्तारः

भावविस्तारः

यह कविता आधुनिक कवि डॉ. रमाकान्त शुक्ल के काव्यसंग्रह से ली गई है। डॉ. शुक्ल आधुनिक संस्कृत जगत् में राष्ट्रपति सम्मान तथा पद्मश्री सम्मान से विभूषित मूर्धन्य कवि हैं जिनका काव्य पाठ न केवल भारतीय आकाशवाणी - दूरदर्शन अथवा अन्य विविध कविसम्मेलनों में अपितु मौरिशस-अमेरिका-इटली-यू.के आदि देशों में भी प्रशंसित है। भाति मे भारतम्, जयभारतभूमे, भाति मौरिशसम्, भारतजनताऽहम्, सर्वशुक्ला, सर्वशुक्लोत्तरा, आशाद्विशती, मम जननी तथा राजधानी-रचनाः इनकी महान् काव्य रचनाएँ हैं। इनके अतिरिक्त पण्डितराजीयम् अभिशापम्, पुरश्चरणकमलम्, नाट्यसप्तकम् इत्यादि पुरस्कृत एवं मञ्चित नाट्यरचनाएँ तथा अन्य अनेक सम्पादित ग्रन्थ भी इनकी लेखनी से लब्धप्राण हुए हैं, कवि की कुछ अन्य रचनाएँ भी पढ़िए-

- परिमितशब्दैरमितगुणान्, गायामि कथं ते वद पुण्ये।
चुलुके जलधिं तुङ्गतरङ्गं करवाणि कथं वद धन्ये।

जय सुजले सुफले वरदे, विमले कमला-वाणी वन्द्ये।

जय जय जय हे भारत भूमे जय-जय-जय भारत भूमे।

- यत्र सत्यं शिवं सुन्दरं राजते,
रामराज्यं च यत्राभवत्पावनम्।

यस्य ताटस्थ्यनीतिः प्रसिद्धिं गता

भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥

- मोदे प्रगतिं दर्श दर्श
वैज्ञानिकीं च भोतिकीं, परम्।
दूयेऽद्यत्वे लोकं लोकं
शठचरितं भारत जनताऽहम्॥
- जयन्त्येतेऽस्मदीया गौरवाङ्काः कारगिलवीराः
समर्च्या आसतेऽस्माकं प्रणम्याः कारगिलवीराः।

मई-षडविंशदिवसादैषयो मासद्वयं यावत्,

अधोषित-पाक-रण-जयिनोऽभिनन्द्याः कारगिलवीराः॥

इत्यादिप्रकारेण विविध-विषयों पर कवि की विविध रचनाएँ हमें प्राप्त होती हैं
जिनका रसास्वादन करते हुए पाठक आनन्दित होता है।

